MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE:09 SEP. 2026

एमसीयू में 'द अनबिकमिंग' के लेखक से विद्यार्थियों का संवाद

एकाग्रता से बेहतर होता है हर काम : वाजपेयी

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में चर्चित पुस्तक द अनबिकमिंग के लेखक एवं मोटिवेशनल स्पीकर कार्तिकेय वाजपेयी ने विद्यार्थियों से संवाद किया। उन्होंने कहा कि एकाग्रता से सभी का बेहतर होते हैं। हमारे भीतर मौजूद मौन दृष्टा ही शिव तत्व है, जबकि प्रकृति सृजन की शक्ति है। शिव और शक्ति का योग ही परफेक्शन है और उत्कृष्टता के लिए स्थिरता व एकाग्रता जरूरी है।

पुस्तक पर चर्चा करते हुए वाजपेयी ने कहा कि बुद्धि और विवेक अलग-अलग हैं। बुद्धि जन्मजात क्षमता है, जबकि विवेक साधना से विकसित होता है। जीवन के उद्देश्य को खोजने के बजाय स्वयं को इतना तैयार करना चाहिए कि उद्देश्य हमें खोज ले। उन्होंने विद्यार्थियों से वर्तमान में जीने और अनुभवों में गहराई से उतरने की सलाह दी। उनका कहना था कि भूतकाल भय और भविष्य तृष्णा पैदा कर सकता है, इसलिए वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करना जरूरी है। उन्होंने मौलिकता को सफलता की कुंजी बताते हुए कहा कि डिजिटल एल्गोरिथम के प्रभाव से बचकर स्वयं को समझने के लिए समय देना चाहिए।

एकाग्रता से ही कार्य बेहतर होता है और सृजनात्मकता सहज रूप से आती है। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि विद्यार्थियों का लक्ष्य केवल डिग्री हासिल करना नहीं, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा को पहचानना होना चाहिए। कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन विभागाध्यक्ष डा. पवित्र श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम का संचालन डा. विशाखा राजुरकर ने किया। इस अवसर पर विभाग के समस्त विद्यार्थी एवं शिक्षक उपस्थित थे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH '09 SEP.2026

यों से पूछा गया कि ...

वर्तमान में टिके रहना ही बेहतर काम की कुंजी

● भोपाल / राज न्यूज नेटवर्क

एमसीयू में द अनबिकमिंग के लेखक ने विद्यार्थियों से किया संवाद

हमारे भीतर मौजूद स्थिरता शिव तत्व और सृजन की क्षमता शक्ति है। दोनों का संतुलन ही किसी कार्य को उत्कृष्ट बनाता है। वर्तमान में रहकर एकाग्रता से काम किया जाए तो जीवन और करियर के लक्ष्यों को बेहतर ढंग से हासिल किया जा सकता है। यह बात लेखक एवं मोटिवेशनल स्पीकर कार्तिकेय वाजपेयी ने मंगलवार को एमसीयू में विद्यार्थियों से संवाद के दौरान कही। अपनी पुस्तक की अनबिकमिंग की चर्चा कर बताया कि यह परफेक्शन की खोज में निकले एक क्रिकेटर और उसके कोच की कहानी है। वाजपेयी ने कहा कि बुद्धि जन्मजात क्षमता है, जबकि विवेक साधना से विकसित होता है। इसलिए घटनाओं को गहराई से अनुभव करते हुए मौजूदा क्षण में रहना जरूरी है। डिजिटल एल्गोरिथम के प्रभाव के बीच मौलिकता बचाने स्वयं को समय दें और अपनी पहचान दूसरों की अपेक्षाओं से तय न करें। अध्यक्षता करते कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि छात्रों का लक्ष्य केवल डिग्री हासिल करना नहीं, बल्कि अपनी क्षमताओं को पहचानकर अलग-अलग क्षेत्रों में आगे बढ़ना भी होना चाहिए।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'RAJ EXPRESS '09 SEP.2026

एमसीयू में लेखक से विद्यार्थियों का संवाद

भोपाल। शिव और शक्ति के योग के लिए स्थिरता आवश्यक है। अगर हमें अपने किसी भी एक्शन में उत्कृष्टता चाहिए तो स्थिरता होना बहुत जरूरी है। यह बात मंगलवार को एमसीयू में विद्यार्थियों से संवाद कर प्रख्यात लेखक कार्तिकेय वाजपेयी ने कही। अपनी पुस्तक द अनबिकमिंग पर चर्चा कर वाजपेयी ने बताया कि यह एक ऐसे क्रिकेटर और उसके कोच की कहानी है जो परफेक्शन की खोज में हैं। उन्होंने पुस्तक को लेकर विद्यार्थियों से संवाद किए और उनके प्रश्नों के उत्तर दिए। विश्वविद्यालय के विज्ञापन एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में वाजपेयी ने विद्यार्थियों को सफल जीवन और करियर के लिए कई टिप्स दिए।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PEOPALS SAMACHAR '09 SEP.2026

शिव और शक्ति का योग ही परफेक्शन है: कार्तिकेय वाजपेयी

एमसीयू में कार्यक्रम के दौरान कार्तिकेय वाजपेयी का स्वागत किया गया। • सौः आयोजक

• लेखक और मोटिवेशनल स्पीकर कार्तिकेय वाजपेयी ने एमसीयू में विद्यार्थियों से किया संवाद

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: हमारे भीतर मौजूद स्थिरता का तत्व शिव है, जबकि प्रकृति सृजन का प्रतीक शक्ति है। शिव व शक्ति का योग ही परफेक्शन है। जीवन, करियर और किसी भी कार्य में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए स्थिरता व एकाग्रता बेहद जरूरी है। यह बात लेखक और मोटिवेशनल स्पीकर कार्तिकेय वाजपेयी ने मंगलवार को माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में विद्यार्थियों से संवाद के दौरान कही।

विश्वविद्यालय के विज्ञापन व जनसंपर्क विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में वाजपेयी ने अपनी चर्चित पुस्तक 'द अनबिकमिंग' पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि पुस्तक एक क्रिकेटर और उसके कोच की कहानी है, जो परफेक्शन की तलाश में हैं। उन्होंने कहा कि बुद्धि और विवेक अलग-अलग हैं। बुद्धि जन्मजात संज्ञानात्मक क्षमता है, जबकि विवेक साधना और अनुभव से विकसित होता है। वाजपेयी ने कहा कि अतीत की तुलना में वर्तमान को देखने पर दुख और भविष्य की दृष्टि से देखने पर लालसा पैदा होती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरू विजय मनोहर तिवारी ने की। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों का लक्ष्य केवल डिग्री हासिल करना नहीं होना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को लेखन सहित अन्य रचनात्मक क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। आभार विभागाध्यक्ष डा. पवित्र श्रीवास्तव ने माना और संचालन डा. विशाखा राजुरकर ने किया। कार्यक्रम में विद्यार्थी और शिक्षक उपस्थित रहे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA '09 SEP.2026

शिव–शक्ति के योग से मिलती है उत्कृष्टता : वाजपेयी

माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय में मोटिवेशनल प्रोग्राम

निज संवाददाता

भोपाल, 8 सितंबर. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में लेखक और मोटिवेशनल स्पीकर कार्तिकेय वाजपेयी ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए कहा कि किसी भी काम में बेहतर परिणाम के लिए स्थिरता और एकाग्रता जरूरी है.

उन्होंने कहा कि शिव स्थिरता और शक्ति सृजन का प्रतीक है. दोनों का संतुलन ही उत्कृष्टता की ओर ले जाता है. विज्ञापन एवं जनसंपर्क विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में वाजपेयी ने अपनी पुस्तक 'द अनबिकमिंग' पर भी चर्चा की. उन्होंने बताया कि पुस्तक एक क्रिकेटर और उसके कोच की कहानी के जरिए उत्कृष्टता की तलाश को सामने रखती है. उन्होंने कहा कि बुद्धि और विवेक अलग अलग हैं. बुद्धि हमारे साथ आती है, जबकि विवेक अनुभव और साधना से विकसित होता है. विद्यार्थियों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान में रहकर अपने अनुभवों को गहराई से समझना जरूरी है. अतीत से तुलना दुख और भविष्य की चिंता लालसा बढ़ा सकती है.

वाजपेयी ने डिजिटल एल्गोरिथम के बढ़ते प्रभाव के बीच अपनी मौलिकता बनाए रखने पर जोर दिया. उन्होंने कहा कि जीवन का बड़ा उद्देश्य खुद को पहचानना है. एकाग्रता के जरिए ही व्यक्ति अपने काम को बेहतर कर सकता है. कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि विद्यार्थियों का लक्ष्य केवल डिग्री हासिल करना नहीं होना चाहिए. कार्यक्रम में डॉ. पवित्र श्रीवास्तव ने आभार व्यक्त किया संचालन डॉ. विशाखा राजुरकर ने किया.

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVBHARAT '09 SEP.2026

'शिव और शक्ति का योग ही परफेक्शन'

एमसीयू में लेखक कार्तिकेय वाजपेयी ने विद्यार्थियों से किया संवाद

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपालः माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में चर्चित पुस्तक 'द अनबिकमिंग' के लेखक एवं मोटिवेशनल स्पीकर कार्तिकेय वाजपेयी ने विद्यार्थियों से संवाद किया। उन्होंने कहा कि हमारे भीतर मौजूद स्थिरता शिव तत्व है, जबकि प्रकृति सृजनकर्ता के रूप में शक्ति है। शिव और शक्ति का योग ही परफेक्शन है और उत्कृष्टता के लिए स्थिरता जरूरी है।

उन्होंने कहा कि बुद्धि और विवेक अलग-अलग हैं। बुद्धि के साथ हम जन्म लेते हैं, जबकि विवेक पाने के लिए साधक बनना पड़ता है। जीवन में सफलता के लिए वर्तमान में रहकर घटनाओं को गहराई से अनुभव करना और एकाग्रता बढ़ाना आवश्यक है। उन्होंने मौलिकता, सृजनात्मकता और डिजिटल एल्गोरिथम के प्रभाव पर भी विचार रखे। वाजपेयी ने कहा कि जीवन का उच्च उद्देश्य स्वयं को जानना है और अपनी पहचान को बाहरी अपेक्षाओं से नहीं बांधना चाहिए। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि विद्यार्थियों का लक्ष्य केवल डिग्री हासिल करना नहीं होना चाहिए। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. पवित्र श्रीवास्तव और डॉ. विशाखा राजुरकर सहित विद्यार्थी एवं शिक्षक उपस्थित रहे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM
'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA '09 SEP.2026

पत्रकारिता विवि में लेखक कार्तिकेय वाजपेयी ने किया संवाद

स्थिर मन से ही किसी कार्य में मिलेगी उत्कृष्टता

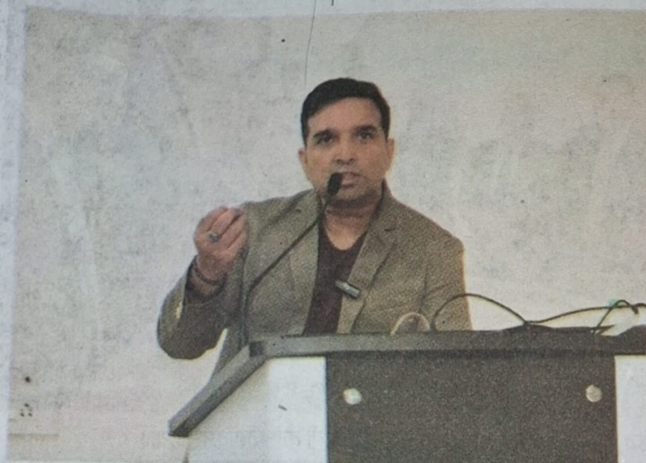

स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

हम सभी के भीतर एक तत्व है जो एक मौन दृष्टा या पर्यवेक्षक है। यह जो स्थिरता की अवस्था है वही शिव तत्व है। प्रकृति हर क्षण कई चीजों को जन्म देती है। वह सृजनकर्ता है। वह अपने स्वरूप में शक्ति है। शिव और शक्ति के योग के लिए स्थिरता आवश्यक है । अगर हमें अपने किसी भी कार्य में उत्कृष्टता चाहिए तो उसके लिए स्थिरता होना बहुत जरूरी है। इस तरह परफैक्शन शिव और शक्ति का योग है। हमारे हर कार्य, करियर और पूरे जीवन के लिए इस योग का होना आवश्यक है। यह कहना है प्रसिद्ध लेखक एवं प्रेरक वक्ता कार्तिकेय वाजपेयी का। वे मंगलवार को माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि में अपनी पुस्तक 'द अनबिकमिंग' पर विद्यार्थियों से संवाद कर रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विवि के कुलगुरु विजयमनोहर तिवारी कर रहे थे। संवाद सत्र का आयोजन विवि के जनसंपर्क एवं जनसंचार विभाग द्वारा किया गया था। वाजपेयी ने आगे कहा कि बुद्धि और विवेक दोनों ही अलग-अलग चीजें हैं। हम बुद्धि के साथ ही जन्म लेते हैं। यह हमारे भीतर की संज्ञानात्मक क्षमता है। लेकिन विवेक इससे बिल्कुल भिन्न है। इसे पाने के लिए हमें साधक होना पड़ता है। संवाद के दौरान वाजपेयी ने विद्यार्थियों को सफल जीवन और करियर के लिए कई सुझाव भी दिए।

लेखन के क्षेत्र में आगे आयें विद्यार्थी

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि विद्यार्थियों के जीवन का अंतिम लक्ष्य सिर्फ डिग्री लेना नहीं होना चाहिए। औपचारिक तौर पर शिक्षा लेने के अलावा भी विद्यार्थी कई क्षेत्रों में बहुत बेहतर कार्य कर सकते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को लेखन के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए भी प्रोत्साहित किया। अंत में आभार प्रदर्शन विभागाध्यक्ष डा. पवित्र श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर विभाग के समस्त विद्यार्थी एवं शिक्षक उपस्थित थे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH JYOTI '09 SEP.2026

एमसीयू में छात्रों से संवाद करते लेखक कार्तिकेय वाजपेयी।

एमसीयू में चर्चित पुस्तक 'द अनबिकमिंग' के लेखक से विद्यार्थियों का संवाद

शिव और शक्ति का योग है परफेक्शनः कार्तिकेय

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

हम सभी के भीतर एक तत्व है जो एक मौन दृष्टा या पर्यवेक्षक है। यह जो स्थिरता की अवस्था है वही शिव तत्व है। प्रकृति हर क्षण कई चीजों को जन्म देती है, वह सृजनकर्ता है। वह अपने स्वरूप में शक्ति है। शिव और शक्ति के योग के लिए स्थिरता आवश्यक है। अगर हमें अपने किसी भी एक्शन में उत्कृष्टता चाहिए तो उसके लिए स्थिरता होना बहुत जरूरी है। इस तरह परफेक्शन शिव और शक्ति का योग है, हमारे हर कार्य, करियर और पूरे जीवन के लिए इस योग का होना आवश्यक है। यह बात मंगलवार को एमसीयू में विद्यार्थियों से संवाद करते हुए प्रख्यात लेखक और मोटिवेशनल स्पीकर कार्तिकेय वाजपेयी ने कही। अपनी पुस्तक 'द अनबिकमिंग' पर चर्चा करते हुए वाजपेयी ने बताया कि यह एक ऐसे क्रिकेटर और उसके कोच की कहानी है जो परफेक्शन की खोज में हैं।

बुद्धि और विवेक दोनों ही अलग-अलग चीजें हैं

उन्होंने कहा कि बुद्धि और विवेक दोनों ही अलग-अलग चीजें हैं। हम बुद्धि के साथ ही जन्म लेते हैं। लेकिन विवेक इससे बिल्कुल भिन्न है। इसे पाने के लिए हमें साधक होना पड़ता है। हमारे जीवन के उद्देश्य का सीधा और गहरा संबंध इससे है। हमें सोचना चाहिए कि अपने जीवन का उद्देश्य हम खोजते हैं या जब हम पूरी तरह तैयार हो जाते हैं तो जीवन का उद्देश्य हमें खोज लेता है। वर्तमान समय बहुत ही अप्रत्याशित सा है। हम किसी अज्ञात विचार से चिंतित होते हुए मौजूदा समय में नहीं रह पाते। अक्सर हम वर्तमान समय को भूतकाल या भविष्य के साथ तुलना करते हुए देखते हैं। लेकिन अगर मौजूदा समय को पुराने वक्त के हिसाब से देखेंगे तो हमें दुख होगा और भविष्य की दृष्टि से देखेंगे तो यह एक तरह की भूख या लालसा को जन्म देगा।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'HARIBHOOOMI '09 SEP.2026

संवाद मोटिवेशनल स्पीकर कार्तिकेय वाजपेयी ने स्टूडेंट्स को दिए सफलता के टिप्स

'अटेंशन नहीं, एकाग्रता तय करेगी सक्सेस'

सिटी रिपोर्टर • 'आज के दौर में हर कोई दूसरों का अटेंशन चाहता है, लेकिन कैरियर और जीवन में बेहतर करने के लिए दूसरों का ध्यान पाने से ज्यादा जरूरी है अपनी एकाग्रता को साधना। जब हम अतीत से वर्तमान को देखते हैं तो भय की नजर से देखते हैं। जब हम भविष्य की नजर से देखते हैं तो तृष्णा पैदा होती है। इसलिए वर्तमान में पूरी तरह मौजूद रहना जरूरी है। अपने अनुभव में गहराई तक उतरना जरूरी है।' यह बात चर्चित पुस्तक 'द अनबिकमिंग' के लेखक, कॉर्पोरेट वकील और मोटिवेशनल स्पीकर कार्तिकेय वाजपेयी ने मंगलवार को एमसीयू में स्टूडेंट्स से संवाद के दौरान कही। उन्होंने कहा कि परफेक्शन के लिए स्थिरता जरूरी है। शिव स्थिरता और शक्ति-सृजन का प्रतीक है। दोनों का योग ही उत्कृष्टता की ओर ले जाता है।

कार्तिकेय वाजपेयी

सफलता से आगे... खुद को पहचानना ही जीवन का लक्ष्य

बुद्धि जन्म से, विवेक अनुभव और साधना से

कार्तिकेय ने कहा कि बुद्धि के साथ हम जन्म लेते हैं। यह हमारी संज्ञानात्मक क्षमता है। विवेक अलग चीज है। इसे पाने के लिए साधक बनना पड़ता है। जीवन का उद्देश्य खोजने के बजाय कई बार व्यक्ति के पूरी तरह तैयार होने पर उद्देश्य खुद उसे खोज लेता है।

अटेंशन स्पैन बढ़ाने के लिए अनुभव में उतरें

कार्तिकेय ने कहा-वर्तमान में रहते हुए भी उससे जुड़ न पाना एकाग्रता की कमी से जुड़ा है। किसी घटना या काम को गहराई से अनुभव करने पर विचारों का शोर कम होता है। व्यक्ति उस काम से बेहतर तरीके से जुड़ पाता है। यही अनुभव रचनात्मकता को भी जन्म देता है।

अपनी मौलिकता से पहचान बनाएं

कार्तिकेय ने कहा कि हम अक्सर वैसा बनने की कोशिश करते हैं जैसा दूसरे हमें देखना चाहते हैं। इसके बजाय युवाओं को खुद से पूछना चाहिए कि वे वास्तव में क्या बनना चाहते हैं। अपनी पहचान और विचारों के लिए खुद को समय देना जरूरी है।

जीवन का अंतिम लक्ष्य खुद को पहचानना

कार्तिकेय ने कहा-जीवन का उद्देश्य सफलता हासिल करना नहीं है। स्वयं को पहचानना भी है। अपनी पहचान को दूसरों की अपेक्षाओं में बांधने के बजाय सहज रहकर अपने काम से जुड़ना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता एमसीयू के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की।

क्रिकेट से कॉर्पोरेट और फिर लेखन तक का सफर...

भोपाल में बचपन बिताने वाले कार्तिकेय ने 11 की उम्र में मप्र के लिए पहला राष्ट्रीय क्रिकेट मैच खेला। बाद में एमबीए किया। आईटीसी समूह के जॉन प्लेयर्स व विल्स लाइफस्टाइल जैसे ब्रांड्स में सेल्स-मार्केटिंग का काम किया। इसके बाद कानून की पढ़ाई की। कॉर्पोरेट लॉ के क्षेत्र में आए। वर्तमान में दिल्ली में कॉर्पोरेट लिटिगेशन फर्म चलाते हैं। उनकी पुस्तक 'द अनबिकमिंग' एक क्रिकेटर और उसके कोच की कहानी के जरिए परफेक्शन, एकाग्रता और जीवन के उद्देश्य को समझाती है। पुस्तक की प्रस्तावना तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा ने लिखी है।